INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 7, July 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

# हाखोर बिसिंगनि नोङखोर बाईसिदि' नाटक में सामाजिक चित्रण

**Mr. Bipash Debbarma,**
**Guest Faculty, Ramthakur college, Agartala, Badharghat.**

## Abstract

"हाखोर बिसिंगनि नोङखोर बाईसिदि" नाटक कॉकबरक भाषा का एक बहुत ही प्रभावशाली और यथार्थवादी नाटक है। इस नाटक का मुख्य उद्देश्य समाज के उन पहलुओं को उजागर करना है जो अक्सर मुख्यधारा की चर्चाओं से बाहर रह जाते हैं। नाटक का शीर्षक अंधविश्वास से भरे त्रिपुरी समाज को अंधेरे से बाहर आने के भाव को दर्शाता है। इस नाटक के माध्यम से लेखक यह दिखाना चाहती है कि कैसे हाशिए पर रहने वाला समाज अभावों और सामाजिक कुरीतियों के दलदल में फंसा हुआ है। साथ ही बदलते समय के साथ सामाजिक ताने-बाने में आ रहे बदलावों और उससे उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का इसमें चित्रण किया गया है।

नाटककार का नाटक केवल समस्याओं को ही प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि समाज को एक आईना दिखाता है ताकि लोग अपनी कमियों को पहचानें, रूढ़िवादिता के "हाखोर" (गड्ढे) से बाहर निकलें और एक प्रगतिशील समाज के निर्माण की ओर कदम बढ़ाएं। संक्षेप में, हाखोर बिसिंगनि नोङखोर बाईसिदि केवल एक नाटक नहीं, बल्कि कॉकबरक भाषी समाज की वास्तविक परिस्थितियों, मानवीय संवेदनाओं, और सामाजिक न्याय की मांग करता हुआ एक सशक्त दस्तावेज है। यह दर्शकों को आत्ममंथन करने और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा प्रदान करता है।

**Keyword:** शिक्षा, अंधविश्वास, पुजारी संस्कृति, चुड़ैल, त्रिपुरी संस्कृति।

### नगेंद्र जमातिया का जीवन परिचय:

नगेंद्र जमतिया कॉकबरक साहित्य जगत के एक बहुत ही चर्चित और त्रिपुरा जनजाति के लेखक के रूप में प्रसिद्ध है। जिसका जन्म 22 मई 1947 को गोमती जिले के उदयपुर तोता नामक गांव में हुआ था। नाटककार बचपन से ही रंगमंच पर नाटक और नृत्य देखते आये थे किन्तु उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वे नाटक लिखेंगे । कहने का तात्पर्य है कि उन्होंने अपने इच्छा से नाटक नहीं लिखा बल्कि अपने समाज के परिस्थितियों को देखकर वे नाटक लिखने को मजबूर हुए हैं। समाज में अंधविश्वास इतना ज्यादा था कि लोग उस अंधविश्वास के दल-दल में फँसते चले जा रहे थे। इसी परिस्थितियों से परेशान विवश होकर उन्होंने कलम उठाया और अंधविश्वास का विरोध करते हुए उन्होंने लिखना प्रारम्भ किया था। नगेन्द्र जी ने समाज के सभी लोगों को एक साथ उठने को कहा और उनमें नवचेतना लाने का आह्वान किया।

हाखोर बिसिंगनि नोङखोर बाईसिदि नाटक को उन्होंने पहली कहानी के रूप दिया था किन्तु तिपरा समाज में अंधविश्वासों का ज्यादा प्रचलन देखने के बाद उन्होंने नाटक का रूपरेखा तैयार किया। वे सोचते थे कि यदि इसे नाटक के रूप में रंगमंच पर यथार्थ रूप में मंचन किया जाए तो प्रत्यक्ष रूप से लोगों के बीच संदेश पहुँचा पाएगा कि अंधविश्वास समाज के लिए कितना घाटक है। यह नाटक उनके समाज को सुधारने का एक छोटा सा प्रयास रहा है। लोग वास्तविकता से परिचित हो पाएंगे कि डायन कहकर स्त्री पर अत्याचार करना, उसे मारना, पीटना सामाजिक रूप से या कानूनी रूप से सही नहीं है। इस नाटक में उन्होंने अपने समाज के लोगों से आह्वान किया है कि अब अंधेरे, निराशा, हताशा में पड़े रहने का समय नहीं है, जगाने और अपने में समाज में, बदलाव या परिवर्तन लाने का वक्त आ गया इसलिए नाटककार अपने इस नाटक में नव चेतना लाने का प्रयास और आह्वान किया है। यह नाटक नगेन्द्र जमातिया द्वारा लिखा गया है। जिनका हाखोर

बिसिंगनि नोंङखोर बाईसिदि अर्थात गुफा के अंदर से निकल आओं नाटक के माध्यम से समाज को किस तरह से बदले। इस विषय पर उन्होंने बहुत ही गहराई से चिंतन-मनन किया है। इस नाटक के माध्यम से वे कहना चाहता है कि एक समाज के अंदर पढ़ाई लिखाई की रोशनी नहीं होने से आंखें होते हुए भी आंखें नहीं है कि बराबर होता है, समाज में पढ़ाई लिखाई की रोशनी नहीं होने के कारण ही हम अंधेरों में डूबे हुए दिशाहीन होता है।

तिपरा समाज में ओचाई या पंडित के कर्तव्य को बहुत ही अच्छा और उच्च नजरियाँ से देखा जाता है, लेकिन कई ऐसे पंडित है जिसके नियम कानून और रहन-सहन के ढंग अच्छा नहीं होने के कारण समाज के आंखों में कालिक पोंछ दिया जाता है। तिपरा समाज में अनेक ऐसे अंधविश्वास हैं जो समाज को जड़ से पकड़कर रखा हुआ है, जिसने समाज को आगे बढ़ने से रुक रखा है। इसी नाटक में तिपरा समाज की डायन या चुड़ैल जिसे कॉकबरक भाषा में 'सुकाल' बोला जाता है। किसी भी विधवा स्त्री या फिर कमजोर स्त्री को डायन कहकर प्रताड़ित करने की प्रवृति कई वर्षों से देखा जा सकता है। जहाँ समाज के कुछ पंडित वर्ग के लोग और औचाई का स्थान सर्वोपरि हैं। जो समाज में अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। साथ ही वे चाहते हैं कि समाज के सभी लोग उसे शक्तिशाली मानें और उनका 'जी हुजूर करे'।
वह अपने लेखन में अपने ही समाज का यथार्थ चित्रण करते हैं। अपने समाज को ऊँचा उठाने की लालसा ने उन्हें लिखने की प्रेरणा दी। लेखन के माध्यम से तिपरा समाज में सुधार लाना चाहते हैं। इसी का उदाहरण है 'हाखोर बिसिंगनि नोखोर बाईसिदि' नाटक। जहाँ वे अपने समाज में फैले अंधविश्वास, रूढ़ियों, तंत्र-मंत्र का खंडन करते हैं। समाज के बुध्दिजीवी और शिक्षित वर्ग को आगे आने का आह्वान करते हैं ताकि समाज में फैले हुए इन बुराईयों को जड़ से समाप्त कर दिया जाए और स्वच्छ समाज का निर्माग हो।

**भूमिका:**

लेखक नगेंद्र जमातिया एक ऐसी व्यक्ति है जो अपने समाज के प्रति श्रद्धा, प्रेम और लगाव का भाव रखते हैं। जिसके कारण वह अपने लेखन शैली में डूबते हुए समाज को ऊपर उठाने की विचार को ध्यान में रखते हुए उसका लेखन कार्य को देखा जाता है, और इसीलिए वह लेखन कार्य में समाज के लिए किस तरह अच्छा हो सकता है इस सोच को लेकर ही वह अपने लेखन चलाया। "गुफा के अंदर से निकल जाओ" नाटक 2001 में प्रकाशित हुआ था। कॉकबरक साहित्य जगत में नगेन्द्र जमातिया का नाम विषेश उल्लेखनीय है। उन्होंने कहानी, नाटक, कविताएँ आदि विधाओं के माध्यम से समाज को एक नया दृष्टिकोण दिया है। उनकी रचनाओं की विषय-वस्तु, परिस्थितियाँ और परिवेश अलग-अलग हैं। उन्होंने अपने तिपरासा समाज के रहन-सहन, संस्कृति, रीति-रिवाज, खान-पान आदि विषयों को यथार्थ रुप में अन्य समाज व समुदाय के सम्मुख रखा है। जहाँ उन्हें अंधविश्वास, अशिक्षा, हताश में डूबे लोगों के मन:स्थितियों को अत्यंत ही बारीकी के साथ समझने का सहज प्रयास किया है। उनका नाटक हाखोर बिसिंगनि नोखोर बाईसिदि (2001) में उन्होंने समाज में नवचेतना का आहवान किया और समाज के लोगों को अंधेरे से बाहर निकल आने का आहवान किया है। समाज के शिक्षित और मध्यवर्गीय परिवारों को एक साथ होकर चलने को कहाँ! 'हाखोर बिसिंगनि नोखोर बाईसिदि' नाटक को नाटकीय रूप देने से पूर्व यह कहानी विधा के रूप में अपना का रूप रेखा तैयार कर चुके थे। बाद में अपने समाज और आस-पास के परिवेशों को देखकर उन्होंने इसी कहानी विधा से हटाकर नाटक का रूप दिया। जिसे वह मंचों में प्रस्तुत कर प्रत्यक्ष रूप से लोगों को एक नई रोशनी दिखाना चाहते थे। लोगों में अच्छे और बुरे के बीच के फासले के अंतर को दिखाना चाहते थे। गलत तरीकों को अपनाकर जो लोग भोले-भाले लोगों को ठगते थे। स्त्रियों को डायन कहकर उन पर अत्याचार आदि नगेंद्र जी को भीतर तक आहत करते थे। यह सब देखकर उन्हें लगता था कि हमारा समाज भीतर से धीरे-धीरे खोखला होता जा रहा है। इसलिए उन्होंने अपने नाटक के माध्यम से समाज को नई दिशा दिखाने का प्रयास किया है।

कहानीकार नगेंद्र जमातिया ने कहानियों के अलावा नाटक भी लिखे हैं। हाखोर बिसंगनि नोखोर बाईसिदि उनका प्रसिद्ध नाटक है। जिसका प्रकाशन 2001 में हुआ था। रचनाकर ने इस नाटक के माध्यम से समाज में फैले हुए अंधविश्वास, भुत-

प्रेत, कुरीतियों, तंत्र-मंत्र, डायन आदि जेसे अंधविश्वासों का खुलकर विरोध किया और समाज को एक स्वच्छ व नया दिशा दिखाने का प्रयास किया। नाटक का नायक हाथाई ऐसा व्यक्ति है जिन्होंने अपने समाज को नयी रोशनी दिखाकर स्वच्छ जीवन जीने की प्रेरणा दिया है। इस नाटक में जनजातीय समाज के उन परिस्थितियों को चित्रित किया गया है, जहाँ गाँव के लोग अंधविश्वास पर विश्वास करते हुए किसी अच्छी महिला को डायन कहकर उसे प्रताड़ित किया जाता है। जहाँ सम्पूर्ण समुदाय के लोग उसके विरोध खड़े हो जाते हैं, उसे गाँव से खदेड़ दिया जाता है। इसके लिए ओचाई (पुरोहित) उत्तरदायित्व होता है।

नगेंद्र जमातिया को अपने समाज की यह भयावह स्थिति देखकर मन में कहीं न कहीं बेचेनी, हताशा होता है, जिस कारण से उन्होंने अपने समाज के यथार्थ रूप को अपने नाटक में अभिव्यक्त किया है, पूर्व के जनजातीय लोग अपने समाज के नियमों का पालन ईमानदारी से करते आए हैं और अपने रीति-रिवाज, संस्कृति, परंपराओं के साथ जीवन जीने में ही खुशी महसूस करते आए हैं। इसी नाटक में खाजूती, बियालती और एक विधवा को डायन कहकर दोष दिया जाता है। हाथाई नाम का लड़का इस नाटक का प्रमुख पात्र है। उसमें जागरूकता है जिस कारण वह कोरमोति को मरने से बचाता है, क्योंकि हाथाई की मां और उसको पालने वाला लंदन के डॉक्टर होने के कारण कोरमोति को मलेरिया की दवा देकर ठीक करता है, साथ ही हाथाई गाँव में जितने भी समस्याएं है, उन सब को दूर किया और गाँव में जितने भी लोग बीमारी से मर रहे हैं उन सभी के पास जाकर सबको दवा खिलाकर ठीक किया। समाज में जो लोग हताशा, निराशा और अंधेरों में भटक रहे है, उन सब को रोशनी का नया मार्ग दिखाया।

तिपरा समाज के गाँवों में चौधरी का सेना संस्कृति के नियमों के अनुसार हैं उन सब रीति-रिवाजों को भी इस नाटक में दिखाने का प्रयास लेखक ने किया। चौधरी गाँव की देखभाल करने वाला और गाँव के सभी अच्छे-बुरे को देखने वाला को कहा जाता है। हाथाई चौधरी के घर में रहता है, उसका गाँव में आने के तुरंत बाद उसके सम्मुख कई समस्याएं आना शुरू हो जाता है। इन समस्याओं के कारण ओचाई इस तरह से हाथाई के कई ऐसे कामों में समस्याएं डालने का काम करता है और अपना नाम कमाया। पाखंडी ओचाई हाथाई को गलत ठहराकर गाँव वालों को गलत दवाई खिलाता है। उसको गाँव से निकाल देने का भी दृश्य इस नाटक में देखने को मिलता है। इस नाटक में हाथाई युवाओं के मन में जागरूकता लाने का प्रयास करता है और कहता है कि – "पढ़ना लिखना आने से ज्ञान जागता है, और ज्ञान लोगों को जागरूक बनाता है .....और जागरूक बनाने के लिए मैं तुम लोगों को सीखाना चाहता हूँ।"... हाथाई के बहुत से अच्छे कामों को नहीं देख पाने के कारण हाथाई को गाँव से निकालते हुए गाँव के ओचाई को गलत काम करते देखा जाता है।

रचनाकार ने पाठक को और समाज को यही बताने का प्रयास किया है कि हाथाई के सामने कई समस्याएं होने के बाद भी वह जीत जाता है। गाँव में जिन स्त्रियों पर अन्याय, अत्याचार हुआ है, डायन कहकर उन्हें बांधकर रख दिया गया था, वह उन सबको मुक्त करके लाता है और मौत के मुँह में जाने से बचा लेता है। इस प्रकार नगेंद्र जी ने हाथाई के माध्यम से समाज में फैले अंधविश्वासों को दूर कर, नयी रोशनी दिखाई है, नया मर्ग दिखाया है। लोगों को अपने समाज के लिए अच्छे कार्य करने को प्रोत्साहित किया है।

**नाटक के माध्यम से सामाजिक रूपांतरण :**

नाटक के माध्यम से समाज में रहने वाले लोगों में बदलाव अच्छे तरह से दिखाता है। लोगों के जीवन की बात को नृत्य के माध्यम से समाज के आंखों के सामने जिन्दा नजर आते है। नाटक के माध्यम से समाज के रहन सहन, खान पान, सोच विचार आदि सब देखा जाता है। नाटक के माध्यम से बहुत सी समाज में रहने वाले लोगों की जीवन चित्रण देखने को मिलता है। कॉकबरक साहित्य को भी हम दूसरी साहित्य की तरह उच्च स्तर के पद पर रख सकते है कहकर कह सकते हैं।

कॉकबरक नाटक के माध्यम से सामाजिक चित्रण, समाज के रीति रिवाज और लोगों के लिए अच्छे की बात को बहुत उच्च विचार की साथ देखा जाता है। " गुफ़ा के अंदर से निकल जाओ" नाटक का अवलोकन करके देखने पर हमें यह ज्ञात होता है कि इस नाटक में समाज के लोग जो अंधेरे में गिर रहे हैं, उसको हाथाई के माध्यम से समाज के लोगों को बदलने की तरफ़ देखकर लिखा गया नाटक है। समय स्थान के बदल जाने से कई लोगों की रहन सहन, खान पान, भी बदल जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी जीवन में जो भी हो रहा है उसको लेकर ही नाटक लिखा जाता रहा है और समाज के आंखों में हो रही अंधविश्वास को दिखाया गया है। समाज में रहने वाले लोगों के अच्छे के लिए ही लेखक और अच्छे सोच विचार करने वाले लोग कॉकबरक नाटको के माध्यम से समाज में अच्छे अच्छे बातों की सिख देती रही।

हमारे समाज में बहुत से ऐसे गंदे रीति रिवाज है, जिसके कारण हमारे समाज अंधेरे में डूबते रहते हैं और कभी उच्च स्तर पर पहुंच नहीं पाता है। अंधविश्वास से गिरे हुए और पढ़ाई लिखाई की रोशनी समाज में नहीं होने के कारण समाज के लोगों को बहुत संघर्ष में डूबे देखा जाता है। इसलिए लेखक हाथाई के माध्यम से एक शिक्षित जो पढ़ाई लिखाई के रोशनी से प्राप्त है और नए समय के रहन-सहन, खान पान से ढले और जिसको कलम चलाना आता हो उस बात को उठाता है। हाथाई एक पढ़े लिखे के घर में रहकर बड़े होने के कारण उसके सोच विचार एवं देखने की नजरिया भी बहुत अच्छे हैं इसलिए वह गांव के बहुत से गलत लोगों के साथ संघर्ष के बाद भी गांव की युवा युवतियों और अपने से छोटे बड़ों को पढ़ाई लिखाई करना सीखाता है, नाम लिखना, A,B,C,D पढ़ना और इसके अलावा भी गड्ढा खोद के शौचालय करना, शहत खराब होने से डॉक्टर को दिखाकर दवाई खाना, इन सब बातों को लेकर हाथाई ने अपने समाज के अच्छे के लिए कदम बढ़ाया और इसी तरह समाज में एक इंसान अच्छे कदम में आगे बढ़ने के कारण ही समाज के रहन-सहन को बदल सकता है।

**समाज के अंधविश्वास को लेकर सोच विचार :**

लेखक नगेंद्र जमतिया ने अपने लेखन के माध्यम से समाज के लोग़ किस तरह से अंधविश्वास में पड़ा उन सब बातों को लेकर अपने नाटक का विषय बनाया। हमारे समाज में सबसे ज्यादा अंधविश्वास में डूबने का कारण उन पुरोहितों की संस्कृति से है, जो अच्छे इंसान को भी डायन कहकर मार देता है और गांव में कुछ गलत होने से पूजा पद्धति का सहारा लेते हुए रोगी के नाम पर मुर्गी बत्तख, बकरी और कछुआ आदि का बली चढ़ाया जाता है। जिसका सेहत खराब है उसका ठीक हो या ना हो और औचाइयों को शराब का बोतल देकर पूछने से- 'ईश्वर की काला छाया, रहने का स्थान अच्छा नहीं है, या फिर किसी डायन की छाया' कहकर झूठ बोलकर बहुत से ऐसे औचाई को पूजा पद्धति के नाम पर अपने इच्छा के अनुसार खा पीकर जाते देखा जाता है। उसके पश्चात रोगी का देहांत हो जाना यह सब देखा जाता है। जो की हम देख सकते है कि सही जरूरत के समय दवाई नहीं खा पाने के कारण कुछ न कुछ होकर लोगों की मृत्यु हो जाना देखा जाता है। डॉक्टर की दवा खाने से शरीर की शक्तियां खत्म होती है और कुछ काम नहीं कर पाती है, पढ़ाई लिखाई करने से आलसी होता है, झूम कृषि का कार्य नहीं कर पाता है और घर परिवार का काम करने में आलसी हो जाता है। गांव की चौकदुरी केवल अपने खुद के अच्छे को सोचते हुए और गांव के अच्छे को न सोचकर, हर दिन झूम कृषि से आने के बाद युवा

युवतियों को शराब पीकर गीत नृत्य करना इस तरह से कई गलत और बुरे कामों के कारण हमारे समाज अंधविश्वास में डूबे रहते हैं।

टिपरा समाज में अंधविश्वास की बात को लेकर देखने से हमें इस बात का ज्ञात होता है कि किस तरह एक दूसरे के आशीर्वाद को छिनके नाराजगी और उलझनों से डूबते नजर आते हैं। नाटक में हम यह देख सकते है कि कोरमोती गांव की चौकदुरी की बेटी है जो मलेरिया जैसे बीमारी का शिकार हो जाता है जिसके लिए औचाई कई सारे पूजा पद्धति करने के बाद भी कोर्मोटी की बीमारी को ठीक नहीं कर पाता है और शरीर काप कपाते हुए उसको पानी पीने की इच्छा होती है। उसी समय हाथाई गाँव में आता है और कोरमोती की हालत को देखकर बुरा लगता है और उसको पानी पिलाता है। कोरमोती को दवाई खाने के लिए भी आग्रह करता है। जब हाथाई कोरमोती के घर पहुंचा गांव के युवा युवतियां शराब के नशे में लद खापीकर, धूम धाम से नाच रहा होता है, उन सबको को देखकर हाथाई को बहुत बुरा लगता है। हाथाई एक पड़ी लिखी होने के कारण समाज के गंदे और गलत रहन-सहन और खान-पान से जीतना हो सके दूर रहने की कोशिश करता है। नाटक में लेखक ने एक स्थान पर यह दिखाने की कोशिश किया है कि जब हाथाई कुमिला बाजार से दवा लेकर वापस आ रहा होता है उसका मुलाकात जंगल के रास्ते में गांव के गुंडो के साथ मुलाकात होता है, जिसमें डाइकों, बॉथमा रोजोंग और हॉकी नामक गुंडो ने हाथाई को गैर लिया और हाथाई किस तरह से हिम्मत भड़कते हुए उन सब को मार गिराता है। उसके पश्चात कोरमोती हाथाई के हाथ का दवाई खाकर ठीक हो जाता है। लेकिन ठीक होने के बाद भी गांव में कई ऐसे गलत बातों का जन्म होता है।

## निष्कर्ष :

"गुफा के अंदर से निकल जाओ" (हाखोर बिसिंगनि नोङखोर बाईसिदि) नाटक का अवलोकन करने के माध्यम से यह ज्ञात है और अंतिम में यह कहने की जरुरत होता है कि समुदाय में कभी भी गलत शीतल बहता है उस समय समुदाय और समाज के लोगों को बहुत बड़े समस्याओ से जूझते नजर आता है। लेखक नगेन्द्र जमतिया ने इस नाटक के माध्यम से टिपरा समाज में किस तरह प्राचीन समय से अंधविश्वासों को लेकर आते नजर आते है। इस तरह के अंधविश्वासों में सबसे ज्यादा धरावनी है डायन (Swkal), इस तरह के शब्द डायन सुनते ही लोग ढरके मारे कापने लगते हैं और मन में अजीब अजीब सवालो को महसूस करने लगते है। इस तरह अंधविश्वास में डूबने का कारण होता है समाज में पढ़ाई लिखाई की कमी होना, जिसके चलते समाज के लोगों को समस्याओ का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार हमारी समुदाय में ज्यादातर अंधविश्वासों को विश्वास करते जी रहे समाज को बदलने ने के लिए हाथाई नामक युवा पात्र के माध्यम से अच्छा रास्ता दिखाने का प्रयास किया गया है। नाटक में हम यह देख सकता है कि हाथाई गाँव के युवाओं को पढ़ना लिखना सीखाने की साथ साथ गाँव के लोगों को नया रोशनी भी दिखाते है। पढ़ाई लिखाई नही करने से हम अच्छे अच्छों को पहचानने में दिक्कत महसूस होता है जिसके कारण हम देख सकते है कि चौकधुरी की बेटी खाना नही चाहते थे और कहते है की दवाई खाने शरीर से ताकत का ताकत खत्म होता है। समुदाय में सिख के रोशनी नही होने के कारण समाज के लोगों को आंखे होते हुए भी नही होने की बराबर देखा जाता है। इस तरह के अंधविश्वासो में डूबे समाज के मन में जागरूकता लाने का कार्य हाथाई नामक नाटक के पात्र ने किया और इस तरह के अंधविश्वासों में डूबे समाज को उससे बाहर लाना आसान कार्य नही था जो की हाथाई एक पढे लिखे होने के कारण और साथ में धैर्य, समाज के प्रति प्रेम होने के कारण कर पाया।

लेखक नगेन्द्र जमातिया ने अपने इस नाटक का प्रमुख पात्र हाथाई के माध्यम से समाज के प्रति प्रेम और समुदाय के अच्छे के लिए कार्य को करते दिखाता है।

## संदर्भ सूची:-

1. जमातिया, नगेन्द्र. जून 2001. *Hakor Bisingni Nokharbaisidi*. अगरतला. ट्राइबल रिसर्च एण्ड कल्चरल इंस्टिट्यूट।

2. देबबर्मा, नन्द कुमार. नवंबर 2018. *Thungnuk Koklam*. कॉकबरक साहित्य सभा. अगरतला।

3. देबबर्मा, नगेन्द्र. फ़रवरी, 2001. *Imangni Yakhili.* ढलेसवर. नूतन पालि. अगरतला. जोरानी खोराङ्ग पब्लिकैशन।

4. देबबर्मा, सुधन्वा. 1950-1955. *एगिए चोलो.* अगरतला. त्रिपुरा बानी प्रकाशन।

5. देबबर्मा, श्यामलाल. 1987. *बेंगसुनाल-2* बिशरामगंज. ट्राइबल स्टूडेंट्स।

6. देबबर्मा, रबीन्द्र किशोर. 2013. *कॉकबरक कॉकरुबाय रुकुनगो.* अगरतला. जोरा पब्लिकैशन।

7. भट्टाचार्य, साधन कुमार. 1978. *एरिस्टॉटल-एर पोएटिक्स ओ साहिततत्त्व.* कोलकाता-73. Deys पब्लिशिंग।

8. देबबर्मा, श्यामलाल. 2015. *कॉकबरक साहित्य ओ संस्कृति.* स्मृति ओ मूल्यायन परजूलचना अगरतला. त्रिपुरा बानी प्रकाशन।

**Copyright & License:**

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.